



श्रीरत्नप्रभाकर शानपुष्पमाला पुष्प न. ४८-४९

श्रीरत्नप्रमद्वरीश्वर तद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध या थोकका प्रबंध.

भाग १३-१४ वा.

संग्राहक.

श्रीमदुपदेश ( कमला ) गच्छाय मुनिभी  
ज्ञानसुन्दरजी ( गयवरचन्दजी )



प्रकाशक.

श्रीसंघफलोधी सुपनादिकी आवंदसे.

प्रबन्धकता.

शाह मंघाराजजी माणोयन मु. फलोधी.

प्रथमावृत्ति १०००

विक्रम मवन् १९७८

मंघाराजजी माणोयन मु. फलोधी. शाह मंघाराजजी माणोयन मु. फलोधी.



संवत् १९७७ कि. शालमें मुनिधी ज्ञानसुन्दरजी महाराज का चतुर्मासा फालोधी नगरमें हुआ था आपधी का सदुपदेशसे ज्ञानवृद्धि के लिये निम्न लिखत पुस्तके प्रकाशित हुई हैं.

- १००० श्रीप्रबोध भाग ४ वा शाहा रेखचन्द्रजी लीदमीलालजी कोपर की कर्पणे
- १००० श्रीप्रबोध भाग १ शाहा हीरचन्द्रजी फुलचन्द्रजी कोपर की कर्पणे ( भावति २ जी )
- १००० श्रीप्रबोध भाग ८ वा शाहा अमरचन्द्रजी योगराजजी सोडाकि कर्पणे से.
- १००० श्रीप्रबोध भाग ६ वा शाहा तेनमलजी भीमरीलालजी गोलेप्या तथा सुगनमलजी टटाकी कर्पणे से.
- ४००० सुबोधनिबन्दावली अष्टविंशती शाहा डुरामलजी हीरचन्द्रजी वेदकि कर्पणे से.
- ४४०० इन्द्राजुबोध प्रथम शक्तिरुद्र शाहा धनसुखदासजी आनकरदजी गोलेप्याकि कर्पणे से.
- १००० हिंदी भेडकर नामो की गन्धनाथर ज्ञान इन्द्रमालादि कर्पणे से.
- १००० शत निबन्धा संगी का उपर की गन्धनाथर ज्ञान इन्द्रमालादि कर्पणे से
- १००० अक्षयन चौरागी शाहा अमरचन्द्रजी योगराजजी सोडाकी कर्पणे से.

- १७५०० श्रीरघु कलौषी सुपनो भादि कि भावदसे.
- २००० तीर्थपात्रा स्वरन.
- १००० अमे साधु शामाटे षषा.
- १००० नन्दीयत्र मूलपाठा
- १५०० इभ्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका
- ७००० मान पुष्पो का गुच्छ एकर्जीन्द
- १००० स्वरन संग्रह भाग १ शो. भा.
- १००० स्वरन संग्रह भाग २ द्वि० भा.
- १००० स्वरन संग्रह भाग ३                    ११
- १००० दान श्रविणी                               ११
- १००० अनुकृपा श्रविणी                           ११
- १००० प्रभमाहा स्वरन                           ११
- १००० दिनति श्रुतक
- १००० शीघ्रबोध भाग १० का
- १००० शीघ्रबोध भाग ११ का
- १००० शीघ्रबोध भाग १२ का
- १००० शीघ्रबोध भाग १३ का
- १००० शीघ्रबोध भाग १४ का

१७५००

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं. १

श्री रत्नप्रभासूरी सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

# शीघ्रबोध या थोकनाप्रबंध

भाग १३ वा.



थोकडा नम्बर १.



बहुश्रुती कृत १४ राज.

जहाँपर पांचास्तिकाय है उन्हींको लोक कहा जा  
वह लोक असंख्याते कोडनकोड योजनके विस्तारवाल  
उन्हींका परिमाणके लिये राजसंज्ञा दी गई है. वह राज भी  
अनंन्य कोडोनकोड योजनका है उन्हीं राजका परिमाणने १४  
राज परिमाण लोक कहे जाते हैं, वह उर्ध्व-अधोलोकिक  
अपेक्षा है. परन्तु कितना उर्ध्व वा अधोजानेपर कितने विस्तार  
आता है. वह सब इन्हीं थोकडे द्वारा कहेगे ।



नाम.	जाडी.	पहंली.	घनराज.	परतर.	सूनि.	खण्ड.
रत्नप्रभा	१ राज	१ राज	१ राज	४ राज	१६ राज	६४ राज
शार्करप्रभा	१ "	२॥ "	६॥ "	२५ "	१०० "	४०० "
बालुप्रभा	१ "	४ "	१६ "	६४ "	२५६ "	१०२४ "
पंकप्रभा	१ "	५ "	२५ "	१०० "	४०० "	१६०० "
धूमप्रभा	१ "	६ "	३६ "	१४४ "	५७६ "	२३०४ "
तमप्रभा	१ "	६॥ "	४२॥ "	१६६ "	६७६ "	२७०४ "
तमतामा०	१ "	७ "	४९ "	१९६ "	७८४ "	३१३६ "

अत्रोलोकमें सर्वे घनराज १७५ परतरराज ७०२ सूचिराज २८०८ खण्डराज ११२३२ होते हैं.

मंभूमितलारो १॥ राजउर्ध्व जाये तब पहला दुसरा देवलोक आता है जिसे आदो राजउर्ध्व जाये तब एक राजविस्तार है वहाँसे आदो राजउर्ध्व जाय तब १॥ राजविस्तार है वहाँसे पाय राज जाये तब २ राजविस्तार वहाँसे पाय राज जाये तब २॥ राजविस्तार है वहाँ पर सुधमं इशान देवलोक है.

सौधमं इशान देवलोकमें उर्ध्व एक राज जाते है वहाँपर तीजा चौथा देवलोक आते है जिसे आदो राज जाये तब तीन राजविस्तार है वहाँसे आदो राज जाये



द्वन्द्वलोक	जाडपग.	विस्तार.	यन०	पत्तर.	ग्रन्थि.	सगड०
संभ्रमसं	०॥ राज	१ गज	०॥ गज	२ गज	८ गज	३२ गज
वदसि	०॥ "	१॥ "	१३	४॥ "	१८	७२
वदसि	०॥ "	२॥ "	१॥	४	१६	६४
सपसं इयान	०॥ "	३॥ "	१॥	६॥	२५	१००
वदसि	०॥ "	३	४॥	१८	७२	२८८
३-४ द्वन्द्वलो	०॥ "	४	८	३२	१२८	५१२
५ द्वन्द्वलो	०॥ "	५	१८॥	७५	३००	१२००
६ द्वन्द्व०	०॥ "	५	६॥	२५	१००	४००
७ द्वन्द्व०	०॥ "	४	४	१६	६४	२५६
८ द्वन्द्व०	०॥ "	४	४	१६	६४	२५६
A. १० द्व०	०॥ "	३	४॥	१८	७२	२८८
११-१२ द्व०	०॥ "	२॥	३३	१२॥	५०	२००
वदसि	०॥ "	२॥	१॥	६॥	२५	१००
६ श्री० ने	०॥ "	२	३	१२	४८	१६२
वदसि	०॥ "	१॥	१३	४॥	१८	७२
सगुचार ५०	०॥ "	१	०॥	२	८	३२



- (७) पाथटेदार (८) श्लगहार (९) पाथटेरधनरो०  
 (१०) धनोदधि० (११) परदासु० (१२) कूरदासु०  
 (१३) नमकादाहार (१४) नरकरधनरो० (१५) नरकादाना  
 (१६) कलोकानरो (१७) धर्मादाहार (१८) धर्मवेदना०  
 (१९) देववेदना० (२०) ईश्वरदाहार (२१) शत्रुपदपुत्रदाहार

(१) नामदाहार—गंगा यमरा शीला अजना गीता नया मापवती

(२) सोमदाहार—गन्धर्वा शार्कर० बालुकाश्रमा संक. प्र. धूम्रभा गन्धर्वा और कनकनाश्रमा ।

(३) जालदानी—अथर्व नरक एषोक गजकी जाही है

(४) पादुलपत्तो—सोनी नरक एक गजकीनाश्रमाकी है. दुर्गा ना गज, तीर्थी बका गज, सोधी बांघ गज, सांपनी से गज, लठी मातासे गज, मातमी नरक मात गज से विष्णुगने है वस्तु नागतिसे मैगिया एक गजके विष्णुगने है कनकीके प्रमनागी वही जाती है ।

(५) दुर्गापदपुत्रदाहार—अथर्व नरकी प्रमोनाश्रमा प्रमोनाश्रमा जोलनकी है वस्तु दुर्गापदपुत्र वेनी नरका है००००० दुर्गा-  
 रीका है०००० गीमगीका है०००० सोधीका है००००  
 बांघनीका है०००० लठीका है०००० मातमीका है०००००  
 जोलनकी है.











## थोकडा नम्बर ३

वहूत सूत्रोंसे संग्रह.

( भुवनपतियोंके २१ द्वार. )

(१) नामद्वार	(८) चन्द्रद्वार	(१५) देवीद्वार
(२) वासाद्वार	(९) इन्द्रद्वार	(१६) परीपदा०
(३) राजधानी	(१०) सामानीक०	(१७) परिचारणा
(४) समाद्वार	(११) लोकपाल०	(१८) वैक्रयद्वार
(५) भुवनसंख्या	(१२) तावतेसका	(१९) अवधिद्वार
(६) वर्षाद्वार	(१३) आत्मरचक	(२०) सिद्धद्वार
(७) वस्त्रद्वार	(१४) अनकाद्वार	(२१) उत्पन्नद्वार

(१) नामद्वार—असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार  
विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार दिशाकुमार उदद्विकुमार  
वायुकुमार मन्कुमार.

(२) वासाद्वार—भुवनपति देवोका निवास कहां पर  
है ? यह मन्प्रभानरक १=०००० जोजनकी है जिम्मे १०००  
जो० उपर १००० जो० नीचे छोडके मध्यमे १७०००० जो०  
जिम्मे १३ पान्धडा और १० अन्तरा है उन्होमे ऊपरका दो  
अन्तरा छोडके १० अन्तरामे दश जानके भुवनपतियोंकी



शोभनीक है इत्यादि ओर भी ६ निकायदेवोंकी राजधानी दक्षिणकी तरफ है इसी माफीक उत्तरदिशामें भी समझना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

(४) समाहार—एकेके इन्द्रके पांच पांच सभा है (१) उत्पात सभा (२) अभिशेष सभा (३) अलंकार सभा (४) व्यवय सभा (५) मौषमी सभा.

(१) उत्पात सभा—देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.

(२) अभिशेष सभामें इन्द्रका राजअभिशेष किया जाता है.

(३) अलंकार सभा—देवतोंके भृंगार करते योग वस्त्र-भूषण रहते हैं.

(४) व्यवय सभा—देवतोंके योग धर्मशास्त्रका पुस्तक रहते हैं.

(५) मौषमी सभा—जहां विनमन्दिर चैत्यव्यंम शम्भुकोर आदि हैं ओर सुधर्म सभामें देवतोंके इन्साफ किया जाता है इत्यादि.

५ भुवनमन्त्रादिक भुवनपानियोंके भुवन ७७२००००००  
है जिसमें ०००००००० भुवन दक्षिणदिशामें है ३६६००००००  
उत्तरकी तरफ है. देखो चित्र—



(६) वर्ण, (७) वस्त्र, (८) चन्द, (९) इन्द्र.

दण्ड भ०	वर्ण द्वार	वस्त्र द्वार	चन्द द्वार	इन्द्रोन्द्र	उत्तरोन्द्र
(१) अ०	कालो	रत्ना	चुडामणि	चमरोन्द्र	बलोन्द्र
(२) ना०	शंखला	निला	नागफण	धरणेन्द्र	भूताइन्द्र
(३) सृ०	सूचर्ण	धोला	गुण्ड	वेणुदेव	वेणुदाली
(४) वि०	राना	निला	वस्त्र	हरिकंत	हरिसिंह
(५) अ०	राना	निला	कलश	अग्निमिह	अग्नि-मानव
(६) द्वि०	राना	निला	मिह	पूर्णे	विशेष
(७) द्वि०	पंजर	निला	अथ	जलकंत	जलप्रभ
(८) उ०	स्यर्ण	सुपेत	गज	अमृतगति	अमृतबहान
(९) प०	स्यप्र	पांच वर्णे	मगर	बेलव	प्रभंजन
(१०) मी०	सुवर्ण	सुपेत	वर्द्धमान	गोप	महाघोष











नगर अत्यन्त व्यापक और संख्याते जोजनके विस्तारवाले हैं सारे सन्ममय हैं परिमाण ध्वनपतियों मापतीक.

(४) राजधानीद्वार—सांख्यमित्र और प्यंतर देवीकी राजधानीयों तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्रोंमें हैं जेसे भुवनपति-योंके राजधानीका धर्मन बीया गया था उनी मापतीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः ६२ हजार जोजन के विस्तारवाली हैं सर्व सन्ममय हैं.

(५) महाद्वार—एषके इन्द्रके पांचसाय मना है यथा

(१) उत्पत्तमभा (२) अभिरूपमभा (३) अलंकारमभा (४) अनाद्यमभा (५) गौर्धर्ममभा विष्णुगह्वरपतिने देखो.

(६) सारंग—देवदेवीका सगीका धर्म—यह विष्णु

कोरस्य संपर्क इती पत्तारोका धर्म स्यात् है विष्णुदेवीके जिले धर्म, सत्य और विदुग्धके धर्म पराने भूदेवीके धर्म काली इती मापतीह प्यंतरदेवीके मन्त्रका.

(७) सारंग—विष्णुके सत्य भूदे विष्णुके यह

(८) विष्णुके देवीके कोरस्य संपर्कके मन्त्रका.

## (८) चन्द्रद्वार, (९) इन्द्रद्वार.

देव.	दक्षिण इन्द्र.	उत्तर इन्द्र.	पञ्चमार्गद्वार.
विद्यादेव इन्द्र	कालेन्द्र	महाकालेन्द्र	कर्दमगुरु
भूतदेव इन्द्र	सुरसेन्द्र	प्रतिसेन्द्र	मुल्लगुरु
वसु " "	वृषसेन्द्र	मणिमठ " "	पट्टगुरु
राजस्य " "	त्रिय	महात्रिय	मर्तगुरु
क्रिया " "	त्रिभार	त्रिभार	आशोकगुरु
द्विगुण " "	मातृगण	महागुण	पद्मगुरु
सोदर्य " "	अतिकार	महाकार	नागगुरु
सन्धर्व " "	गतिगति	गतिगण	तुषगुरु
आगुण्य " "	मनिदिन्द्र	मापानीन्द्र	कर्दमगुरु
पद्मगुण्य " "	षाण्डेन्द्र	विशारदेन्द्र	गुणमगुरु
श्रीगदी " "	श्रीदिन्द्र	श्रीगान " "	वटगुरु
भूतगदी " "	इषाण्डेन्द्र	संशयसेन्द्र	मर्तगुरु
श्री " "	सुविण्ड	विगान	आशोकगुरु
महा " "	हाम्पेन्द्र	हाम्पेन्द्र	पद्मगुरु
वसु " "	सेनेन्द्र	महासेनेन्द्र	नागगुरु
वट " "	वसुसेन्द्र	वसुसेनेन्द्र	तुषगुरु

(१०) सामानीक द्वार-सर्व इन्द्रोंके च्यार च्यार हजार देव सामानीक है.

(११) आत्मरक्षक-सर्व इन्द्रोंके सोले सोले हजार देव आत्मरक्षक है.

(१२) परिपदा द्वार-कार्य भुवनपतियोंके माफीक.

परिपदा.	देव परिपदा.	देवी परि०
अर्भितर	८०००	१००
स्थिति	०॥ पत्न्यो०	०॥ साधिक
मध्यम	१००००	१००
स्थिति	०॥ ५० न्यून	०॥ ५०
बाध	१२०००	१००
स्थिति	०॥ साधिक	०॥ न्यून

(१३) देवी-प्रत्यक इन्द्रके च्यार च्यार देवी है एकेक देवीके हजार हजार देवीका परिवार है एकेक देवी हजार हजार रूप वैक्रय कर शक्ती है.

(१४) अनिका द्वार-गजपुरंगादि सात सात अनिका है प्रत्यक अनिकाके ५००००० देवता है सर्व इन्द्रोंके समझना.

(१५) वैक्रयद्वार-इन्द्र सामानीक और देवी एक



हूये हैं इसीसे चंतन्याकि चंतनता प्रगट नहीं होती है वह तो पौद्गलीक सुख है खरा आत्मीक सुख श्री जिनेन्द्र देवोंके धर्मको अंगीकार करनेसे प्राप्त होता है. इति.

सेवंभंते सेवंभंते—तमेवसच्चम्.

—००००००००००००—

थोकडा नं. ५

—००००—

वहूत सूत्रोंसे संग्रह करके.

—००००—

( जोतीपीयोंके द्वार ३१ )

जोतीपी देव दो प्रकारके हैं (१) स्थिर, (२) चर जिस्में स्थिर जोतीपी पांच प्रकारके हैं चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र और तारा यह अढाइ द्वीपके बाहार अवस्थित हैं पकी इंटके संस्थान हैं सूर्य सूर्यके लक्ष जोजन और चन्द्र चन्द्रके लक्ष जोजनका अन्तर है तथा सूर्य चन्द्रके पचास हजार जोजनका अन्तर है, अन्दर का जोतीपीयोंसे आदी क्रन्तीवाला है हमसोंके लिये चन्द्रके साथ अभिच नक्षत्र और सूर्यके साथ पुष्य नक्षत्र योग जोडते हैं. मनुष्य क्षेत्रकि मर्यादाका करनेवाला मानुसोतर पर्वतके बाहारकी तर्फसे लगाके अलोकसे ११११ जोजन उली तर्फ







सूर्यके मुकटपर सूर्यमांडलका चन्द्र है एवं नक्षत्र ग्रह तार ही चन्द्रद्वारा वह देवता पेच्छाना जाता है.

(२) वैमानका पदूलपणा (६) वैमानका जाडपणा — क जोजनका ६१ भाग किजे उन्हीसे ५६ भाग चन्द्रका वैमान हूला है और २८ भाग जाडा है सूर्यका वैमान ४८ भागका हूला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहूला क गाउका जाडा है। नक्षत्रका वैमान एक गाउका पहूला गदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका हूला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फकट रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान—यद्यपि जोतीपीयोंके वैमान आका-  
शके आधारसे रहते हैं अर्थात् वैमानके पाँद्रलोके अगुरुलघु  
र्याय हैं वह आकाशके आधारसे रहे शक्ते हैं। तद्यपि देव  
अपने मालकका बहुमानके लिये उन्ही वैमानोंको हमेशोंके लिये  
उठाये फीरते हैं कारन अडाइद्वीपके अन्दरके देवोंकि स्वभाव-  
प्रकृति गमन करनेके हैं। चन्द्र सूर्यके वैमानको शोला शोला  
हजार देव उठाते हैं जिस्में च्यार हजार पूर्व दिशाकी तर्फ मुह  
कीये हूवे सिंहके रूप, च्यार हजार दाक्षिण दिशा मुह कीये  
हूवे हस्तिके रूप, च्यार हजार पश्चिम दिशामें मुह कीये हूवे  
वृषभके रूप, च्यार हजार उत्तर दिशामें मुह कीये हूवे अश्वके  
रूप १३ ग्रहवैमानको २०० देव उठाते हैं नक्षत्रके वैमानको



उगते सूर्य ४७२६३३५ जोजन दुरोसें द्रष्टिगोचर होता है मके  
शंक्रात तापक्षेत्र ६३६६३३५ । उगतो सूर्य ३१८३१३६॥  
द्रष्टिगोचर होते हैं इति.

( १४ ) अन्तराद्धार-अन्तरा दो प्रकारसे होता है  
व्याघात-किसी पदार्थके विचमें आठ आवे निर्व्याघात कीसी  
प्रकारकी वाद न होय जिस्में व्याघातापेक्षा जघन्य २६६  
जोजनका अन्तरा है क्योंकि निपेड निलवन्तपर्वतके उपर  
कूटशिखरपर २५० जोजनका है उन्हीसे चाँतर्फ आठ आठ  
जोजन जोतीपीदेव दुरा चाल चलते हैं वास्ते २६६ जो०  
उत्कृष्ट १२२४२ जो० क्योंकि १०००० जो० मेरूपर्वत है  
उन्हीसे चाँतर्फ ११२१ जो० दुरा जोतीपी चाल चलते हैं  
१२२४२ जो० अन्तर है, अलोक ओर जोतीपीदेवोंके अन्तर  
११११ जो०, मंडलापेक्षा अन्तरा मेरूपर्वतसे ४४८८० जो०  
अन्दरका मंडलका अन्तर है, ४५३३० जो० बाहारका मंडलके  
अन्तर है । चन्द्र चन्द्रके मंडलके ३५ । ३५५ अन्तर है सूर्य  
सूर्यके मंडलके दो जोजनका अन्तर है । निर्व्याघातापेक्ष जघन्य  
५०० धनुष्यका अन्तर उत्कृष्ट दो गाउका अन्तर है इति.

( १५ ) संख्याद्धार-जम्बुद्विपमें दो चन्द्र दो सूर्य,  
त्वखानमुद्रमें च्यार चन्द्र च्यार सूर्य, घातकिखण्डद्विपमें १२  
चन्द्र १२ सूर्य, कालोददि समुद्रमें ४२ चन्द्र ४२ सूर्य, पुष्का-



(१८) सामानीकद्वार-एकेक इन्द्र के च्यार च्यार हजार सामानीक देव हैं.

(१९) आत्मरक्षक-एकेक इन्द्र के शोला शोला हजार आत्मरक्षक देव हैं.

(२०) परिपदा-एकेक इन्द्र के तीन तीन परिपदां हे अभितर परिपदा के ८००० देव, मध्यम के १०००० चार की १२००० देव हैं और देवी तीनों परिपदा मे १००-१००-१०० हैं.

(२१) अनिकाद्वार-एकेक इन्द्र के सात सात अनिका प्रत्यक अनिका के ५८०००० देवता हैं पूर्ववत्.

(२२) देवी-एकेक इन्द्र के च्यार च्यार अग्र महेषि देवीयों हैं एकेक के च्यार च्यार हजार देवीका परिवार है प्रत्यक देवी च्यार च्यार हजार रूप वैक्रयकर शक्ती हैं ४००० १६००० ६४०००००० कुल देवी हैं ।

(२३) गति-सर्वसे मंद गति चन्द्रकी, उन्होंसे । शीघ्र गति सूर्यकी, उन्हों से शीघ्र गति ग्रहकी, उन्होंसे शीघ्र गति नक्षत्र कि, उन्होंसे शीघ्र गति तारोंकी है, अर्थात् सर्वसे मन्द गति चन्द्रकी ओर शीघ्रगति तारोंकी है ।

(२४) ऋद्धि-सर्व से स्वल्पऋद्धि तारोंकी, उन्होंसे महाऋद्धि नक्षत्र कि, उन्होंसे महाऋद्धि ग्रहकी, उन्हीसे महा-



[३१] उत्पन्न-हे भगवान् सर्व प्राणभूत जीव सत्त्व जोतीपी देवों परे पूर्व उत्पन्न हुआ ? हे गौतम एकवार नहीं किन्तु अनन्ती अनन्ती बार जोतीपी देवों पर उत्पन्न हुआ है परन्तु देव होना पर भी जीवकों आत्मीक सुख नहीं मीला आत्मीक सुख के दाता एक वीतराग है वास्ते उन्होंकी आ-शाका आराद्धि बनना चाहिये इति.

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम्.

## थोकडा नम्बर ६.

बहुतसूत्रसे संग्रहकर.

( वैमानिकदेवोंका द्वार २७ )

१	नामद्वार	१०	इन्द्रनाम द्वार	१६	देवीद्वार
२	वामाद्वार	११	इन्द्रवैमान	२०	वैक्रयद्वार
३	संस्थानद्वार	१२	चन्द्रद्वार	२१	अवापिद्वार
४	आधारद्वार	१३	मानानीक	२२	परिचाग्ना
५	पृथ्वीपदह०	१४	लोकपाल	२३	दृश्यद्वार
६	वैमान उन्नयणी	१५	तावत्रिनका	२४	निद्रद्वार
७	वैमान संख्या	१६	आन्तरिक	२५	मवद्वार
८	वैमान विन्ध्य	१७	अनिकाद्वार	२६	उत्पन्नद्वार
९	वैमान वरुणद्वार	१८	परिपदाद्वार	२७	अन्त्यावहृत्त्व



५-६-७-८- देवलोक और नौग्रीविंग ६ यह पूर्णचन्द्र के आकार एक दुसरेके उपरा उपर है च्यार अणुत्तर वैमान तीखुणा च्यार दिशामे है सर्वार्थसिद्ध वैमान गोलचंद्र संस्थान है.

[४] आधारद्वार-वैमान और पृथ्वीपंड रत्नमय है परन्तु वह किसके आधार है ? पहला दुसरा देवलोक घणोद्वि के आधार है तीजा चौथा पांचवा घण वायु के आधार है छटा सातवा आठवा देवलोक घणोद्वि घण वायु के आधार है शेष वैमान वायु सर्वार्थसिद्ध वैमानतक केवल आकाश के ही आधार है.

(५) पृथ्वीपण्ड (६) वैमानकाउचा (७) वैमान और परतर (८) वर्ग.

वैमान	पृथ्वीपण्ड	वै० उचा	वै० नग्या	वर्ग	परतर
१	२७०० जो	५०० जो	३२ लक्ष	५ वर्ग	१३
२	२७०० ..	५०० ..	२२ ..	५ ..	१३
३	२६०० ..	६०० ..	१२ ..	४ ..	१२
४	२६०० ..	६०० ..	२ ..	४ ..	१२
५	२५०० ..	७०० ..	४ ..	३ ..	६
६	२५०० ..	७०० ..	५० हजार	३ ..	५



सुभासत, श्रीवत्स, नन्दीवर्तेन, कामगन्तानामावेमान मणोगम  
प्रीयगम विनत सर्वतोभद्र.

( १२ ) चन्ह, ( १३ ) सामानीक, ( १४ ) लोकपाल,

( १५ ) ताव० ( १६ ) आत्मरक्षकदार.

इन्द्र.	चन्ह.	साम०	लो०	ता०	आत्म०
शकेन्द्र	मृग	२४०००	४	३३	३३६०००
इशानेन्द्र	महेप	२००००	४	३३	३२००००
संनक्त०	चपर	७२०००	४	३३	२२२०००
महेन्द्र	सिंह	७००००	४	३३	२२००००
मलेन्द्र	बकरा	६००००	४	३३	२४००००
संतकेन्द्र	देवका	५००००	४	३३	२०००००
महाशुक्रेन्द्र	अश्व	४००००	४	३३	१६००००
महसेन्द्र	हस्ती	३००००	४	३३	१२००००
मालेन्द्र	सर्प	२००००	४	३३	२००००
मञ्जुतेन्द्र	गरुड	१००००	४	३३	४००००

( १७ ) अनिकादार-प्रत्यक इन्द्रके सात सात अनिका

हैं. यथा-गव. तुरंग. रथ. वृषभ, पैदल. गन्धर्व नाटिक-मृत्यु-  
कारक प्रत्यक अनिकाके देव अपने अपने सामानीकदेवोंमें  
१२७ गुण हैं जिनमें शकेन्द्रके २४००० नामानीकदेव हैं उन्होमें



आशक्त हैं एवं इशानेन्द्रके भी समझना. शेष देवलोकमें देवी उन्मत्त होनेका स्थान नहीं है उर्ध्व अक्षुण्ण देवलोकके देवी तकके देवी पहला दुमरा देवलोकमें रहती है वह देवीके भागमें जानी है देवीका उर्ध्व काठना देवलोक तक गमन होता है.

( २० ) वैश्वदेव-शक्रेन्द्र वैश्वानरीकदेवी देवतामें दो अन्तुद्विभ भरदे अन्तुद्विभके शक्ति है एवं तानानारी-लोक-पाल-जावशिनका ऊँच देवी भी समझना. इशानेन्द्र दो अन्तु-द्विभ साधिक सप्तशिव तथा मनन्दुमा ४ अन्तु- शक्रेन्द्र ४ साधिक शक्रेन्द्र = अन्तुः तांकेन्द्र काठ साधिक महाशुक्र १६ अन्तुः महान १६ साधिक पारद २२ अन्तुकेन्द्र २२ साधिक अन्तुद्विभ वैश्वदेवमें देवी देव बनाके भरदे मन्दि शक्ति अन्तुद्विभ भरदेनेकी है शेष वैश्वदेव नहीं करे.

( २१ ) अवाधिहार-अवाधिज्ञान मंत्र इन्द्रः अन्तुतके अन्तुद्विभके भाग उ० उर्ध्व अन्तु अन्तु वैश्वानरीके अन्तु तानच्छा अन्तुद्विभके द्विभ महान अर्धो शक्रेन्द्र इशानेन्द्र पहला नरक देते. मनन्दुः शक्रेन्द्र दुमरा नरक देते. शक्रेन्द्र तांकेन्द्र तानारी नरक देते. महाशुक्र महान जोधी नरक देते. अरुतारुत अरुत अक्षुण्ण पांचने नरक देते. तान्द्विभके देव हर्षी नरक पलाय अक्षुण्ण वैश्वान नरकी नरक तथा मन्दि. मित्र वैश्वानक देव मननाकी मन्दिरे अने देवे







१३॥ अंगुल एक यव एक युक्त एक लिख छे बालाग्र पांच व्यवहारीय परमाणु इतना विस्तारवाली पराद्धि है। एक जगति (कोट) एक पद्मवर वेदिका एक वनखंड च्यार दरवाजा कर अति शोभनिक है। इन्ही जन्मुद्विपका दक्षिण उत्तर भरत-क्षेत्र परिमाण खंड किया जाय तो १६० खंड होता है यंत्र।

क्र. सं.	क्षेत्र नाम.	खंड.	जोजन परिमाण.
१	भरतक्षेत्र	१	५२६ + ६
२	सुलहोमवल्गपर्वत	२	१०५२ + १२
३	हेमवपक्षेत्र	४	२१०५ + ५
४	महाहोमवल्गपर्वत	=	४२१० + १०
५	हरिवामक्षेत्र	१६	=४२१ + १
६	निपेटपर्वत	३२	१६=४२ + २
७	महापिदेरक्षेत्र	६४	२३६=४ + ४
८	निलवल्गपर्वत	३२	१६=४२ + २
९	रन्ध्रक्षेत्र	१६	=४२१ + १
१०	रुपापर्वत	=	४२१० + १०
११	एरुवपक्षेत्र	४	२१०५ + ५
१२	सोमवपर्वत	२	१०५२ + १२
१३	पद्मवपक्षेत्र	१	५२६ + ६

जोजन १६ ना भागको कला कह्ये है.

६०—१००००० जोजन



(३) वासाद्वार—इन्हीं लक्ष योजनके विस्तार वाला जम्बुद्विप मे मनुष्य रहनेका वासक्षेत्र ७ तथा १० है यथा- (१) भरतक्षेत्र (२) एरभरतक्षेत्र (३) महाविदहक्षेत्र इन्हीं तीनों क्षेत्रमे कर्मभूमि मनुष्य निवास करते हैं और (१) हमवय (२) हरणवय (३) हरिवास (४) रम्यक्वास इन्हीं चार क्षेत्रोंमें अकर्मभूमि युगल मनुष्य निवास करते हैं एवं ७ तथा दश गीना जावे तो पूर्वजों महाविदहक्षेत्र गीना गया है उन्हींका चार विभाग करना (१) पूर्व महाविदह (२) पश्चिम महाविदह (३) देवकूरु (४) उत्तर कूरु एवं १० क्षेत्र होता है। विवरण—

लक्ष योजनके विस्तार वाला जो जम्बुद्विप है जिन्होंने चौतर्फ एक जगति ( फोट ) है वह जगति आठ योजन की उची है मूलमे १२ मध्यमे = उपर ४ योजनके विस्तार वाली है सर्व वज्ररत्नमय है उन्ही जगति के कीनारेपर एक गौल जाल अर्थात्—भरोखाकी लेन आगइ है वह आदा योजनकी उची पांचसो धनुष कि चोडी कोपीसा और कांगरा सर्व रत्नमय है।

जगति उपरसे चार योजनके विस्तारवाली है उन्ही के मध्यभागमे एक पद्मवरवेदिका आदा याजनकी उची ५०० धनुष कि चोडी दोनो तर्फ निला पनों का स्थाभा पर अच्छा सुन्दर आकारवाली मनमोहक पुतलायों है और भि अनेक







अडाइसो अडाइसो जोजनका भद्रशालवन है वहांसे दक्षिणकि तर्फ निपेडपर्वत तक देवकूरु क्षेत्र और निलवन्त पर्वत तक उत्तर कूरुक्षेत्र है। एकेक क्षेत्र दोदो गजदन्तों कर आदा चन्द्राकार है इन्ही क्षेत्रोंमे युगल मनुष्य तीनगाउ कि अवगाहना और तीन पल्योपम कि स्थिति वाले है देवकूरुक्षेत्रमें कुट सामली वृक्ष चितविचित पर्वत १०० कंचनगिरि पर्वत पांचद्रह इसी माफीक उत्तरकूरुमे परन्तु वह जम्बु सुदर्शनवृक्ष है इति विदहेका च्यार भेद ।

निपेडपर्वत और महा हेमवन्तपर्वत इन्ही दोनो पर्वतोंके विचमे हरिवास नामका क्षेत्र है तथा निलवन्त और रूपी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे रम्यकूवास क्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमे दो गाउकी अवगाहना और दो पल्योपम कि स्थिति वाले युगल मनुष्य रहे ते है ।

महाहेमवन्त और तुलहेमवन्त इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे हेमवय नामका क्षेत्र है तथा रूपी और सीखरी इन्ही दोनों पर्वतों के विचमे एरणवयक्षेत्र है इन्ही दोनों क्षेत्रोंमें एक गाउकी अवगाहना और एक पल्योपम कि स्थिति वाला युगल मनुष्य रहेते है । एवं जम्बुद्विपमे मनुष्य रहेने के दश क्षेत्र है इन्हीको शास्त्रकारोंने वासा काहा है अब इन्ही १० क्षेत्रोंका लम्बा चौडा चाहा जीवा धनुषपीठ आदिका परिमाण यंत्रद्वारा लिखा जाना है ।











( ५ ) इतल बैताद्य—नदावाइ बपटावाइ गन्वावाइ

नालवन्ना यह चार पर्वत १००० जो० उचा २५० जो०  
धरतीमें नानगुरी साधिक पगडि है धानकी पायलीके आकार  
एक हजार जो० पहला दिन्नाग्वाले है ।

( ६ ) चित्तियिचिन जमग नलग यह चार पर्वत देव-

हूठ उतरहूठ युगल क्षेत्रमें निपंड निलवन्नमें २३४ जो०  
एक जोजनका मात्र भाग करना उन्होंने चार भाग हुए  
हैं । यह १००० जो० उचा शोर २५० जो० धरतीमें उडे है  
हूठमें १००० जो० पहला-दिन्नाग्वाला है मध्य ७५० जो०  
परसे ५०० जोजन दिन्नाग्वाला है ।

( ७ ) मेरुपर्वत—मेरुपर्वत जम्बुद्विपके मध्य भागमें

यह एक लक्ष जोजनका है जिन्में १००० जोजन धरतीमें  
शोर २२००० जो० धरतीमें उतर है मूलमें पहलो १००२०  
जो० एक जोजनका इग्यारो या दश भाग है धरतिपर दश  
भाग जोजन दिन्नाग्वाना है उतर इग्यारो जोजन के पीछे  
एक जोजन कम होते कम होते मूल के सांगपर एक हजार  
जिन के दिन्नाग्वाला है मध्य जग नानगुरी साधिक पगडि  
मेरुपर्वतके चारों तरफ एक बरतत वेदीक शोर एक बनवड  
वह बरतन करने योग्य है मेरुपर्वत के चार वन हैं यथा  
१ । भद्रशालवन २ । नन्दनवन ३ । सुमानवन  
४ । पंडकवन ।



सो० चोटी १० जो० उठी वेदिका वनखंड तोरणादि करी  
 संयुक्त है उन्ही च्यार बाबीयों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका  
 प्रधान प्रासाद (महल) है वह प्रासाद ५०० जो० उचा  
 २५० जो० विस्तारवाला है यावत् सपरिवार के आसन सहित  
 है। एवं अप्रिकोनमें भी च्यार बाबी है उत्पला, गुम्मा नितना  
 उच्चता पूर्ववत् परन्तु इन्ही बाबी के मध्य भागमे शकेन्द्रका  
 प्रासाद है एवं वायुकोनमे च्यार बाबी है लिंगा भिगनाभा अञ्जना  
 अञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रासाद सिंहासन सपरिवार  
 नमस्कना एवं नैऋतकोनमे च्यार बाबी श्रीक्रन्ता श्रीचन्द्रा  
 श्रीनहीता श्रीनलीता-मध्यभागमें प्रासाद इशानेन्द्रका समकना  
 बाबी-बाबी के अन्तरामे जो० सुली जमान है उन्हीं के उपर  
 इन्द्रोका प्रासाद है। भद्रशालवनमे आठ विदिशावोंमे आठ  
 इत्तिकुट है वह १२५ जो० धरतीमे ५०० जो० धरतीमे उचा  
 है मूलमे पांचनी जो० मध्यमे ३७५ जो० उपर २५० जो०  
 विस्तारवाला है तीनगुणी भ्राम्हेरी परदि है। पद्मचर, निल-  
 चन्त, सुहन्ति, अञ्जन गिरि, कुमुद, पोलान, विटिन, रोयल-  
 गिरि, इन्ही आठ कुंठोंपर कुंठकेनाम देवता और देवनोंका  
 भूवन रत्नमय है उन्हां देवोंको गवधानी आरनी अरानि  
 दिशाने अन्य अम्बुद्विपमे जानापर अति है विजय देवदत्त  
 नमस्कना भद्रशालवन पृथ गुच्छा गुनावेली तुर कर शोभाय-















विजय है उन्हींके विचमें सीता नाम नदी है वास्ते सीतानदीके उत्तर तटपर ८ विजय और दक्षिण तटपर आठ विजय है इनो माफोके पश्चिम महाविदेहमें सीतोदा नदीके दोनों तटपर आठ आठ विजय है एवं विदेहक्षेत्रमें ३२ विजय है उन्हीका नाम—

पूर्व विदेह सीतानदी.		पश्चिम विदेह सीतोदानदी.	
उत्तर तट.	दक्षिण तट.	उत्तर तट.	दक्षिण तट.
१ कच्छ विजय	वच्छ विजय	पद्म विजय	विप्रा विजय
२ सुकच्छ ,,	सुवच्छ ,,	सुपद्म ,,	सुविप्रा ,,
३ महाकच्छ ,,	महावच्छ ,,	महापद्म ,,	महाविप्रा ,,
४ कच्छवती ,,	वच्छवती ,,	पद्मावती ,,	विप्रावती ,,
५ आश्रिता ,,	रमा ,,	संखा ,,	वग्गु ,,
६ मंगला ,,	रमक ,,	कुमुदा ,,	सुवग्गु ,,
७ पुरकला ,,	रमणीक ,,	निलीना ..	गन्धीला ,,
८ पुष्कलावती ..	मंगलावती ..	शलीलावती ..	गन्धीलावती ,,

प्रत्येक विजय १६-६० जोजन दो कलाकी दक्षिणो-  
 तरमें लम्बी है और २०-२० । जोजन पूर्व पश्चिममें चौड़ी है  
 तथा एक भरतक्षेत्र और दूमरा एरवतक्षेत्र एवं चक्रवर्तोकी  
 ३४ विजय समझना इन्ही चार्नीम विजयमें ३४ दीर्घ वैताल्य











(१५) तीगच्छद्रह-निपेडपर्वत उपर मध्यभागमें तीग-  
छनामा द्रह ४००० जो० लम्बा २००० जो० चौडा दश  
जोवनका उडा है कमल भुवन वहांपर घृतिदेवीका है हैं देवीसे  
इगुण परिमाणवाला समझना इसी माफीक निलवन्तपर्वतपर  
केशरीद्रह भी समझना परन्तु वह कीर्तीदेवीका कमलभुवन  
समझना तथा युगलक्षेत्रका दश द्रहके नामवाले देवता  
नातिक है सब देवदेवीयोंकी एक पन्चोपमकि स्थिति है और  
राजधानी अन्य जम्बुद्विपमें समझना शोला द्रहका सर्व कमल  
१६२०=१६२० कमल सर्व रत्नमय है इति.

द्रह नाम.	पर्वत उपर.	लम्बा.	चौडा.	उडा.	देवी.
पद्मद्रह	चुलहेम०	१०००	५००	१०	श्रीदेवी
महापद्म	महाहेम०	२०००	१०००	१०	लक्ष्मि
तीगच्छ	निपेड	४०००	२०००	१०	घृति
केशरी	निलवन्त	४०००	२०००	१०	शुद्धि
महापुंडरिक.	हृषि	२०००	१०००	१०	हैं
पुंडरिक	सीखरी	१०००	५००	१०	कीर्ती
दशद्रह	वननीपर	१०००	५००	१०	दिवता १०

शुद्धि माय जोत्रन शुद्ध वेली.

(१०) नदीद्वार-जम्बुद्विपमें १४५६०६० नदी है जिल्ले  
चुलहेमवन्तपर्वत उपर पद्मद्रह है उन्ही द्रहमे तीन नदी नीकली



पञ्चरत्नोक्त खीला है मणिरत्नका आलम्बन (हाथ पकड़नेका) पागोतीर्थके उपर प्रत्यक प्रत्यक तोरण है वह तोरण अनेक मणि मौक्ताफलदार आदि अनेक भूषण तथा चित्र कर सुन्दर है उन्ही गंगाप्रभासकुण्डके मध्यभागमें एक गंगाद्विपनामका द्विप है। वह आठ जोजन लम्बा पट्टला है दो कोश पाणिसे उंचा है। सर्व वज्र रत्नमय अञ्छो सुन्दर है। उन्ही द्विपका मध्यभाग पांच प्रकारके मणिसे मृदु स्पर्शवाला है उन्हीके मध्यभागमें गंगादेवीका एक भुवन है वह एक कोपका लम्बो आदा कोशका पट्टला देशोना एक कोशका उंचा है अनेक स्यांभापुतलीयों मौक्ताफलकी मालावाँ यावत् श्रीदेवीना भुवन माफीक मनौहर है वहां गंगादेवी सपरिवार पूर्व किये हूवे मुहूर्तके फल भोगवती हूइ विचरें हैं कुण्डका या द्विपका और देवीका नाम सास्वता है अगर वह देवी चवतो दुसरी देवी उत्पन्न हूवे परन्तु नाम तो वहां ही गंगादेवी रहेता है।

गंगाप्रभासकुण्डका दक्षिणके दरवाजेसे गंगानदी निकली हूइ उत्तर भरतदेशसे अन्य (दोटी) ७००० नदीयोंको साथ लेती हूइ बैताहचपर्वतकी खंडप्रभागुफाके निचेसे दक्षिणभरतमें धाती हूइ वहांसे ७००० नदीयों अर्थात् नर्व १४००० नदीयोंको साथमें लेके जम्बूद्विपकी जनानिको भेदती हूइ पूर्वका लवणतमुद्रमें जा-मीली है इन्ही माफीक निधुनामा नदी भी







नं.	नदी.	पर्यवे.	प्रामे.	नि० उ०	नि० वि०	म० उ०	वि.	परिमार.
१	गंगानदी	नूनदेम	पम	०॥ गाउदी	गो०	१० गो०	१२॥	१४०००
२	गिन्ध	"	"	"	"	"	गो०	१४०००
३	गोहिना	"	"	१ गाउ	१२॥ गो०	२० गो०	१२५	२८०००
४	गोहितमा	महादेम०	महापम	"	"	"	गो०	२८०००
५	हरिकुला	"	"	२ गाउ	२५ गो०	५ गो०	२५०	५६०००
६	हरिश्चन्द्रान्ना	निपुंड	नीमन्ड	"	"	"	गो०	५६०००
७	मीना	"	"	४ गाउ	५ गो०	१० गो०	५००	५३२०००
८	मीनांदा	निलवन्ना	केशरी	"	"	"	गो०	५३२०००
९	नरकन्ना	"	"	२ गाउ	२५ गो०	५ गो०	२५०	५६०००
१०	नारिकुला	रुपि०	महापुंड०	"	"	"	गो०	५६०००
११	रुपकुला	"	"	१ गाउ	१२॥ गो०	२० गो०	१२५	२८०००
१२	सुप्रमाणुला	गिन्धी	पुंडरिग	"	"	"	गो०	२८०००
१३	रक्षा	"	"	०॥ गाउदी	गो०	१० गो०	६२॥	१४०००
१४	रुन्धवन्नी	"	"	"	"	"	गो०	१४०००





१००० जोजन उदा है अर्थात् जम्बुद्विप कि जगतिसे चार्तरु पचणवे पचाणवे हजार जोजन जानेपर चार्तरु दश दश हजार जोजन लवणसमुद्र एक हजार जोजनका उदा है वहासे पचणवे पचणवे हजार जोजन जानेपर घातकि खंड द्विप आता है । लवणसमुद्रके च्यारों दिशामे च्यार दरवाजा है वह जम्बुद्विप मार्फक समझना ।

लवणसमुद्रके मध्यभाग जां १०००० जोजनका गोल चक्राकार १००० जोजनके उदस पाणी है उन्ही लवणसमुद्रके मध्यभागमे च्यार पाताल कलशा है (१) पूर्वदिशामे बडवा मुख पातालकलशो (२) दक्षिणदिशामे केतुनामा पातालकलशो (३) पश्चिमदिशामे जेपु (४) उत्तरदिशामे इक्ष्वर पाताल कलशो । यह च्यारो कलसा लक्ष लक्ष जोजन परिमाण लम्बा है मध्यभागमे लक्ष जोजन विस्तारवाला है कलशोका अधोभाग तथा उपरका मुख दश दश हजार जोजनका है उपर कि ठीकरी एक हजार जोजन कि जाडी है कलशोका मुखपर हजार हजार जोजन लवण समुद्रका पाणी है । एकेक कलशाके विचमे अन्तर २१६२६५ जोजनका है उन्ही प्रत्येक अन्तरामे १६२१ छोटे कलशा है च्यारो अन्तरामे ७८८४ छोटे कलशा है कारण एकेक अन्तरामे कलशोकी नव नव श्रेणि है उन्ही श्रेणिमे कलशा २१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३ एवं नव श्रेणिका १६७१ कलशा है च्यारो

अन्तराके ७=२४ कलशा होता है यह सर्व छोटा पत्तना एक हजार जोजनका लम्बा और मध्यभागमें १००० विम्बार तथा शेषो भाग या मुख मो नो जोजनका और दश जोजनही उपर टीकनी है एवं सर्व ७=२२ कलशा है । उन्ही कलशोके तीन तीन भाग करना जिसमें निचेके ती भागमें वायु है मध्यके ती भागमें वायु और पाणी है उपरके ती भागमें पाणी है । जो निचेका भागमें वायु है यह वैश्वदेव शरीर करे उन्ही समय उपरका पाणी उच्छलने लग जात है यह प्रत्य-दिनमें दो बखत पाणी उच्छा ला देता है ।

नव लवणसमुद्राके बेल (दगमाला) का पाणी उच्छलता है परन्तु तीर्थकर चक्रवरतादि पुन्यधानोंका प्रभावमें एक बुंद भी निचि नहीं गिन्ती है अथवा यह लोकस्थिति है मान्यता नाव बतने है और च्यार पातालकलशोंका अधिपति च्यार देवना है कालदेव, महाकालदेव बेलबदेव, प्रभंजनदेव एक पन्योपमकि स्थिति तथा ७=२४ कलशोंका देवताकी आधा पन्योपमकि स्थिति है इति पातालकलशा ।

नवरासमुद्रमें पाणिकः दगमाला १०००० जो० चोडा विम्बारबाल १०००० जो० उटा है १०००० जो० का उन्वा है सर्व १०००० जो० का है नव रासमु उच्छलता है नव दो काण उन्वा माखा आ-जान है

नवरासमुद्रक न १२४ अथान दाना नव १०००



स्थितिवाले अनुबेलन्धर देवोंका पर्वत है इन्हीं आठों पर्वतोंपर बेलन्धरानुबेलन्धर नागराजा देवोंका आवास प्रासाद है सर्व रत्नमय देवतोंके योग्य वह प्रासाद ६२॥ जो. उचा ३१। जो. का चोडा अनेक स्थभ कर अच्छा सुन्दर है । इति ।

लवणसमुद्रमे छपनान्तरद्विप है उन्हीं के अन्दर पल्योपम के असंख्यात भागके आयुष्यवाला और ८०० धनुष्यकि आवग्गहानावाले युगल मनुष्य रहते हैं जम्बुद्विपके चुलहेमवन्त और सीखरी पर्वत के निशाय (सामिपत्ने) लवणसमुद्रमें दोडोंके आकार टापुवों कि लेन गइ है जैसे जम्बुद्विप कि जगतिसे ३०० जोजन लवणसमुद्रमें जावे तब पेहला द्विप ३०० जोजनका विस्तारवाला आता है उन्हीं द्विपासे ४०० जोजन तथा जगतिसे भी ४०० जो० जानेपर दुसरा द्विप ४०० जोजनके विस्तारवाला आता है । उन्हीं द्विपासे ५०० जोजन तथा जगतिसे भी ५०० जोजन जानेपर तीसरा द्विप ५०० जो० के विस्तारवाला आता है उन्हीं द्विपासे या जगतिसे ६०० जोजन जानेपर चोथो ६०० जो० विस्तारवाला द्विप आता है । उन्हीं द्विपसे या जगतिसे ७०० जो० जानेपर ७०० जो० विस्तारवाला पाचवा द्विप आता है उन्हीं द्विपसे या जगतिसे ८०० जो० जानेपर ८०० जो० विस्तारवाला छठा द्विप आते है उन्हीं द्विपसे या जगतिसे ९०० जो० जानेपर ९०० जो० विस्तारवाला सातवा द्विप आता है सर्व लवणस-



घात कि खंड कि तर्फसे लवणमुद्रमे १२०००  
 जोजन आनपर लवणसमुद्रके बेलके बाहारका पूर्वमे दो चन्द्र  
 द्विपा और पश्चिममे दो सूर्य द्विपा बरह बरह हजार जोजनके  
 विस्तारवाला है इन्ही १२ द्विपों उपर देवताका भुवन-प्रासाद  
 है वह प्रत्यक प्रासाद ६२॥ जोजनका उचा ३१। जोजनके  
 विस्तारवाला अनेक स्थाभादिसे अच्छा शोभनिक है लवण-  
 समुद्रके चारुतर्फ पदम्बर वेदिका है विजयादि च्यार दरवाजा  
 है दरवाजे दरवाजे ३६५२००। का अन्तर है लवणसमुद्रमे  
 ५०० ज० का मच्छ भी है ।

इति लवणसमुद्राधिकार ।

तेवंभने तेवंभते तमेव सच्चम् ॥



शोकडा नम्बर २.



सूत्र श्री जीवाभिगम प्र. ४.



( घातकिखंड द्विपादि )

लवणसमुद्रके चारुतर्फ बलीयाके आकार च्यार लव जोजन  
 विस्तारवाला घातकिखंड नामका द्विप है वह च्यार लव







परिवारमर्दा	१४५६०००	२६१२०००	२६१२०००
रु	१६	३२	३२
वैजाडपरिवार	३४	६०	६०
वडवैजाड	४	=	=
बासा-क्षेत्र	७-१०	१४-२०	१४-२०
चन्द्रमपरिवार	२	१२	७२
सूर्यमपरिवार	२	१२	७२
तीर्थ	१०२	२०४	२०४
श्रेणी	६०	१३६	१३६
गुफा	६०	१३६	१३६
कुलपरिवार	२६२	५४०	५४०
कुलकुंड	५२.५	१०५०	१०५०
कुलसिद्धापत्तन	८१	१०२	१०२

मानोपत्र परिवारके बाहार जो आठलक्ष परिमाण पुष्करद्वी  
क्षेत्र है वह मनुष्य मुन्य है अन्दरका पुष्करद्वी क्षेत्र कि नदी-  
पोंका पानी मानोपत्र परिवारको भेदके बाहारका पुष्करद्वीमें  
जाता है ।

आगोंके द्विपमसुद्रका नाम मात्र लिखा जाने है मत्र  
द्विपमसुद्रोंके न्यार न्यार टुकड़ा है जन्मुद्विपके जगति है





गिरि धार उत्तरदिशामें उत्तराञ्जनगिरि है प्रत्यक भञ्जनगिरि १००० जो० धरतिमें ८४००० जो० धरतिसे उंचा है मूल साधिक दश हजार जो० धरतिपर दश हजार जोजन अर्सीखरपर एक हजार जोजनके विस्तारवाला है। साथि तीनगुणी परदि है सर्व अरिष्ट ( श्याम ) रत्नमय है।

प्रत्यक अञ्जनगिरिके सीखरका तला शममादलका वर माफीक साफ है। सीखरके तलाका मध्यभागमें एक सिद्ध यतन अर्थात् जिनमन्दिर है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चौडो ७२ जो० उंचा अच्चा सुन्दर रमणिय है उन्ही जिनमन्दिरके च्यारो दिशामें च्यार दरवाजा है वह १६ जो० उंचा ८ जो० पहला च्यारो दिशाके दरवाजोके आगे च्या मुखमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चौडा १ जोजन साधिक उंचा है। च्यार दरवाजा १६ जो० उंचा १० जो० चौडा. उन्ही मुखमंडपके आगे प्रेक्षापधरमंडप है वह १०० जो० लम्बा ५० जो० चौडा साधिक १६ जोजन उंचा। उन्हीके अन्दर ८ जोजन विम्नारवाली मणिपिठ चौतरो ( टाणायंगवृत्ति ) सिंहमन देवदुपवस्त्र तथा वज्रका अंकुश उन्हीके अन्दर घटमान अर्धघटमान मौक्राफलकी मालाये फुन्दाकर शोभनिक है। उन्ही प्रेक्षपधर मंडपके आगे एक मधुम ( छत्री ) वह १६ जोजन साधिक विम्नारवाली है उन्हीके च्यारो दिशामें च्यार मणिपिठ चीतग है उन्हीके उपर च्या

जिन प्रतिमासंज्ञित शालग्राम स्तूपन समुद्र मुख किया हवे  
 विराजमान है । उन्हे स्तुभते जागे एक मणिपिठ चातरो है  
 वह आठ जोवनके दिग्गारवाला उन्होके उपर चैत्य वृक्ष आठ  
 जोवनको उचो है बरान करने योग्य है उन्होके जागे शोर  
 भी आठ जोवनका मणिपिठ चातारा है उन्होके उपर महेंद्र  
 ध्वज ६४ जोवनको उचो शोर भी छोटी छोटी विजय विज-  
 यन्ति ध्वज है उन्होके जागे नन्दा पुष्करणी बायी १०० जो०  
 लम्बी ५० जो० चौटी १० जो० उडी अनेक कमल पागो-  
 तीया दौरेर चमर हवे ध्वज कर शोभनिक है । उन्ही बायी  
 के च्यारो दिशा च्यार बनखंड है यह मूल निद्रायतनके एक  
 दिशा के पदार्थ कहा है एसे ही च्यारो दिशासे समझना तथा  
 पूर्व दिशाके बनखंडमे १६००० गोल शालग्राम १६०००  
 चांगुला शालग्राम पडा हवा है एसे पश्चिममे शौर दक्षिणोत्तर  
 दिशासे आठ आठ हजार है वह देवताके आने जाने रखन  
 वह देवताको काम आते है ।

मूल जिनमन्दिरके मध्य भागमे एक मणिपिठ चातरो १३  
 जोवन लम्बा ५०० है उन्ही के उपर एक देवच्छंदो १६  
 जोवन लम्बा ५०० मध्यमे जोना जोवन उचो है अर्चो  
 सुन्दर मंत्र मन्त्रादि उन्हे मध्य सुन्दरमे १०० जिनप्रतिमा

१२४ जिनप्रतिमाओं है जैसे यह एक अञ्जन गिरिपर एक मन्दिर कहा है इसी भाषीक च्यारो अञ्जनगिरिपर च्यार मन्दिर समझना सर्वे पदार्थ रत्नमय बड़ा ही मनोहर है ।

प्रत्येक अञ्जनगिरिपर्वत के च्यारों दिशामे च्यार च्यार बायी है यह बायी एक लक्ष जोजन लम्बी पचास हजार जो० चौडी ओर हजार जोजन कि उढी है पागोतीया तोरशादिसे सुशोभनिक है उन्ही बायी के अन्दर एकेक दक्षिमुखा पर्वत है यह पर्वत १००० जो० उढा है ६४००० उचा है दश हजार जोजन मूलसे ले के सीखरतक पदूला विस्तारवाला है पलक मंथान है । एवं च्यार अञ्जनगिरिके चार्तरु १६ बायीयों है उन्ही के अन्दर १६ दक्षिमुखापर्वत और १६ पर्वतोंके उपर १६ जिनमंदिर है उन्होका धर्यन अञ्जनगिरि पर्वतोंके उपरका मन्दिर भाषीक समझना.

स्थानायांग वृतिमें प्रत्येक बायी के अन्तरे में दोदो कनकगिरि है एवं १६ बायीयों के अन्तरामे ३२ कनकगिरि अर्थात् श्रवणमय १०० जोजनका उचा पलंक मंथान पर्वत है प्रत्येक कनकगिरि के उपर एकेक जिनमन्दिर अञ्जनगिरि भाषीक है एवं च्यार अञ्जनगिरि १६ दक्षिमुखा ३२ कनकगिरि मीलके ४० पर्वतोंके उपर बावन जिनमन्दिर है ।

चार अज्जनागिरि के अन्तराने चार रत्नगिरिपर्वत हैं वह अडाइसो जोवन धरतिने १००० जो० उचा तब स्थान हजार जोवन पदुला पत्तीक संस्थान है प्रत्यक रत्नगिरिपर्वत के चारों दिशाने चार चार राजधानीयों एवं १६ राजधानी हैं वह प्रत्यक राजधानी १००००० जो० के विलारवाली है ३१६२२७।३।१२०।१३॥-१-१-१-६ नान्दरी परादि हैं पावन राजधानीका बरान नात्तीक समस्तना जिल्ले इशान और नैऋत्यकोन रत्नगिरिके = राजधानीयों तो शक्रेन्द्र के अग्रनेहपियोंके हैं और अग्नि और वायुकोन रत्नगिरिके = राजधानीयों इशानेन्द्र के अग्रनेहपियोंकी हैं नन्दीश्वर द्विप आती हैं तब वह पर ठेकती हैं अरु नन्दीश्वर द्विपका नव पदाये कहते हैं ।

४ अज्जनागिरिपर्वत अज्जनरत्नमप.

१६ दक्षिणरत्नपर्वत अंकरत्नमप.

३२ कनकगिरिपर्वत कनकमप.

५२ विनयान्दिर सर्व रत्नमप.

६६५६ वावन नन्दिराने विनयप्रतिमावे.

१०० सुखमंडप १० नन्दिरके दरवाजेपर.

००० प्रेक्षण धर्ममंडप " " "

२०० अधुन.

२६ त्रिनश्रतिमारो स्तूपके शानके.

२०= चैत्यट्टण.

२०= महेन्द्रपूज.

२०= पुष्करणि वारीषो.

१६ वारीषो अश्रनगिरीके शानके.

४ रतीर्णीरापर्वन.

१६ राजधानीषो.

नन्दीधरद्विपके अन्दर बहुतमे भुवनपति वासिनि  
जोतीषी अर धमानिकदेव पारो, चांमामी, नमन्मेरी वा  
त्रिनकल्याणक दिनें वडांपर एकत्र होते है त्रिनमहिमा मगरन  
की मूर्तिषांकी भावभक्ति अर्चनपूजन करते है तथा जंपाचारण  
शिष्या चारणमुनिभी वहांकि यात्रा करनेको पधारते है एतोंमें  
बहुतसे विस्तारमे नन्दीधरद्विपका व्याख्यान किया है परन्तु  
भव्यात्माओंके कंठस्थ करनेके लिये संक्षेपमे मुद्रामर वारों थोकाडा-  
रूपमें लिखदि है वास्ते इन्हीको पेस्तक कंठस्थ कर कीर यह धुनि-  
षांके पास शास्त्रअवण करो तोंके बडा ही आनन्द आवेगा इति.

॥ सेवंभते सेवंभते तमेव सच्चम् ॥





2

3





## निगोदके शरीर और जीवोंके अल्प० ।

### ( ७ ) द्रव्यापेक्षा.

- ( १ ) वादर निगोदके पर्याप्ता शरीर द्रव्य स्तोक.  
 ( २ ) " " अपर्याप्ता " " असं० गु०  
 ( ३ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ४ ) " " पर्याप्ता " " संख्य० गु०  
 ( ५ ) वादर निगोदके पर्याप्ता जीव द्रव्य अनन्त गु०  
 ( ६ ) " " अपर्याप्ता " " असं० गु०  
 ( ७ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ८ ) " " पर्याप्ता " " संख्या० गु०

### ( = ) प्रदेशापेक्षा.

- ( १ ) वादर निगोदके पर्याप्ता जीव प्रदेश स्तोक.  
 ( २ ) " " अपर्याप्ता " " असं० गु०  
 ( ३ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ४ ) " " " " " " संख्या० गु०  
 ( ५ ) वादर " " " " " " अनन्तगुणा  
 ( ६ ) " " " " " " अल्प - गु०  
 ( ७ ) सूक्ष्म " " " " " "  
 ( ८ ) " " " " " " संख्या० गु०



# थोकडा नं. ४.



सूत्र श्री आचारांग अध्या० १ उ० १



( द्रव्यदिशा भावदिशा )

पांचना गणधर सौधर्मस्वामि अरने शांप्य जन्मुस्वामि प्रत्ये कहते है हे जन्मु इन्ही संसारके अन्दर कितनेक जीव एते अज्ञानी है कि जिन्होंको यह ज्ञान नहीं है कि पूर्वभवमें मैं कौन था और कौन दिशामें मैं यहांर आया हूं. दिशा दो प्रकारके होती है (१) द्रव्यदिशा (२) भावदिशा.

(१) द्रव्यदिशा अतारा (१२) प्रकारके है यथा (१) इन्द्रादिशा (पूर्वदिशा). (२) अग्निदिशा (अग्निकोन), (३) जनादिशा (दक्षिणदिशा). (४) नैऋतदिशा (नैऋतकोन); (५) वायुदिशा (पश्चिमदिशा). (६) वायुणा (वायुकोन), (७) मौलादिशा. उदरदिशा. = इमाना (इमानकोन). (८) विमलादिशा. उच्चदिशा. = तलादिशा. अर्वादिशा. एवं इत्यदिशा है अर्वा अर दिशा अर विदिशा इन्ही आठोंका समूह अर इत्यदिशाके मंत्र निम्नलिखित है १८ द्रव्यदिशा होती है अर्वा अर्वाको यह ज्ञान नहीं है कि इन्ही अर्वा

च्छोलोक क्रमःसर संकोचीत ओर उर्ध्वलोक पुनः विस्तार-  
वाला है अर्थात् कम्बरके हथ लगाके नाचता घोषाके आकार  
लोक है यद् भी द्रव्यापेच सास्वत है और वर्णादि पर्यायापेच  
अमास्वन है इन्दीमे इषर वादीयोंका नीरकार किया है ।

( ३ ) कर्मवादी—कर्म अनादि से आत्माके गुणोंको  
रोक रखा है जेमे मूर्य तमस्वी है परन्तु वादलोंका अथवा  
आनामे तेजको रोक देता है वसे कर्म भी जीवके गुणोंको  
रोक देने हे जेमे—

कर्म	आवर्ण्य द्रीशान्त	कौनमा गुणोंको रोकै.
ज्ञानावर्ण्य	धागिका बहस	ज्ञानगुणको रोकै
दर्शनावर्ण्य	रात्राका पोलीया	दर्शनगुणको रोकै
वेदानिय	मघूर्नीपन छुगी	असाद गुणको रोकै
मोहनिय	मदगापान पुण्य	वायक गुणको रोकै
आधुष्य	केद कीया द्वा	अद्वैतावगाहन गुणको रोकै
नामकर्म	चित्रकार माफिकक	अमृति गुणको रोकै
गात्रकर्म	कृमकार ..	अमृत् लघु गुणको रोकै
मन्त्रगात्रकर्म	गत्राका भंडारी	वीर्य गुणको रोकै

इन्ही आठों कर्मोंने आत्माके आठों गुणोंको रोक रखा है व्यवहारनयसे जीवके शुभाशुभ अध्यवशासे कर्मोंका दल एकत्र होते हैं वह अवघाकल्पक जानेपर जीवके रसविपाक उदय होते हूवे जीव सुख और दुःख भोगवते हैं और काल लब्धि प्राप्त कर कर्मोंसे मुक्त हो जीव मौक्षमे भी जाते हैं यह कर्मोंका अस्तित्व बतलानेसे काल स्वभाव वादियोंका निराकार किया है.

( ४ ) क्रिया वादी--जो जीव कर्म कर सहित है वह जीव सदेव क्रिया करताही रहता है और वह शुभाशुभ क्रिया करनेसे शुभाशुभ कर्म रूप फल भी देती है अर्थात् सकर्मों जीवोंके क्रिया अस्तित्व भाव है और क्रिया का फल भी अस्तित्वभाव है यहांपर आक्रियावादीका निराकरण किया है ।

यह च्यार सम्यग्वाद है इन्हीको यथायोग्य जाननेसे ही सम्यग्द्रष्टीकेहलाते हैं इन्हीके सिवाय जो मनःकल्पत मत्तको धारण करनेवाले जीवोंको मिथ्याद्रष्टी कहा जाते हैं । वह अनादि प्रवाहमें परिभ्रमण करने आये हैं और करते ही रहेगो इस लिये भगवानने दो प्रकारके प्रजा फरमाइ है (१) वस्तुका स्वरूपका ज्ञानकर ममभूना. (२) परवस्तुका त्याग करना अर्थात् जीव आश्रय कर कर्म आरहा है उन्हींको रोकना चाहिये.







हे भव्यात्मन् यह उपर लिखा योनिमें परिभ्रमण करता  
 अपना जीव अनादिकालसे मारा मारा फीरता है इन्ही योनि-  
 को मीटानेवाला श्री वीतरागका ज्ञान है इन्हीकी सम्यक्  
 प्रकार आराधना करो ताकें फीर दुसरीवार योनिमें उत्पन्न  
 होनाका कमही न रहे । रस्तु ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ६

—\*⊙\*—

( बहुश्रुति कृत. )

—\*⊙\*—

( प्रत्येक बोलपर ६२ बोल उतारा जावेगा )

नं.	मार्गणा.	जीवमेदः	गुणस्थानः	योग १५	उप० १२	लेख्या ६
१	समुच्चय जीवमें	१४	१४	१५	१२	६
२	स० अर्पणात्ममें	७	३	५	३	६
३	स० अ० अनाहारी	७	३	१	३	६

## थोकडा नं. १०



( घट्ट्युति कृत. )

मार्गणा.	जी.	शु.	घो.	उ.	ली.
मनुष्य जीवमे	१४	१४	१५	१२	६
नारकीमे	३	४	११	६	३
ना० अर्थात्ता	२	३	३	६	३
ना० अ० अनाहारीक	२	३	१	६	३
ना० अ० आहारीक	२	३	२	६	३
ना० अर्थात्ता	१	४	१०	६	३
ना० अ० आहारीक	१	४	१०	६	३
तीर्थचमे	१४	५	१३	६	३
ती० अर्थात्ता	७	३	३	६	३
ती० अ० अनाहारीक	७	३	१	५	३
ती० अ० आहारीक	७	३	२	६	३
ती० अर्थात्तामे	७	५	१२	६	३
ती० अ० आहारीक	७	५	१२	६	३
मनुष्यमे	३	१०	१०	१२	६

१५	म० अर्पयामा	२	३	३	६
१६	म० अ० अनाहारीक	२	३	१	६
१७	मनुष्य अ० आहारी	२	३	२	६
१८	म० पर्याप्तो	१	१४	१४	१२
१९	म० प० अनाहारीक	१	२	१	२
२०	म० प० आहारीक	१	१३	१४	१२
२१	देवतावोमै	३	४	११	६
२२	देवतावो अर्पयामा	२	३	३	६
२३	देव० अ० अनाहारीक	२	३	१	६
२४	दे० अ० आहारीक	२	३	२	६
२५	देव० पर्याप्तो	१	४	१०	६
२६	देव० प० आहारीक	१	४	१०	६
२७	सिद्धभगवानमै	०	०	०	०

॥ सेवंभते सेवंभते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं. ११

( वहू श्रुतिकृत )

अलद्रिया उमे कहते हँ कि जिस्मे वह वस्तु न म  
जेमे मतिज्ञानका अलद्रिया कहनेमे जिन्ही जीवोमे मतिज्ञा  
मोदता हाँ मे पे ले ताजे नेमे चाँदवे इन्ही च्यार गुणस्था  
मतिज्ञानका जनव हे र्नी माफाक मर्च स्थानपर समभन



ज्ञानावर्णिका	१	२	५१७	२	१
दर्शनावर्णिका	१	२	५१७	२	१
वेदनियका	०	०	०	२	०
मोहनियका	१	३	११	८	१
आयुष्यका	०	०	०	२	०
नामकर्मका	०	०	०	२	०
गौत्रकर्मका	०	०	०	२	०
छन्तरायका	१	२	५१७	२	१
सवेदके	१	६	११	८	१
स्रिवेदके	१४	१४	१५	१२	६
पुरुषवेदके	१४	१४	१५	१२	६
नष्टमकवेदके	२	१४	१५	१२	६
अवेदके	१४	८	१५	१०	६
मकपायके	१	४	११	८	१
क्रोधके	१	५	११	८	१
मानके	१	५	११	८	१
माया	१	५	११	८	१
लाभ	१	६	११	८	१
अकपाय	१४	१०	१५	१०	६
मलंग्या	१	१	०	२	०

कृष्णलेखा	॥	१	८	१५	८	३
निललेखा	॥	१	८	१५	८	३
कापोतलेखा	॥	१	८	१५	८	३
तेजोलेखा	॥	१	७	११	८	१
पद्मलेखा	॥	१	७	११	८	१
शुक्ललेखा	॥	१	१	०	२	०
श्लेख	॥	१४	१३	१५	१२	६
संयोगिका	॥	१	१	०	२	०
मनयोगिका	॥	१	१	०	२	०
वचन०	॥	१	१	०	२	०
काययोगि	॥	१	१	०	२	०
श्लेख	॥	१४	१३	१५	१२	६
सम्पुङ्गु	॥	१८	०	१३	६	६
सिन्धुःश्लेख	॥	६	१२	१५	८	६
सिन्धुःश्लेख	॥	१४	१३	१५	१२	६
संज्ञिका	॥	१३	५	१०	८	५
असंज्ञिका	॥	२	१४	१५	१२	६
समाप्तिका	॥	०	०	०	२	०

॥ सर्वभूते सर्वभूते नमेव सच्चिदम् ॥

# थोकडा नं. १२



( वहूश्रुति कृत )

न.	मार्गणा.	जी.	गु.	यो.	उ.
१	शानापर्यायकर्ममे	१४	१२	१५	१०
२	दर्शना० " "	१४	१२	१५	१०
३	वेदनिय " "	१४	१४	१५	१२
४	मोहनिय " "	१४	११	१५	१०
५	श्यायुष्य " "	१४	१४	१५	१२
६	नामकर्ममे	१४	१४	१५	१२
७	गौत्रकर्ममे	१४	१४	१५	१२
८	अन्तरायकर्ममे	१४	१२	१५	१२
९	दशश्रपभनाराच संहनन	२	१४	१५	१२
१०	श्रपभनागच० " "	२	११	१५	१२
११	नारचनहनन " "	२	११	१५	१२
१२	अद्रनागच० " "	२	७	१५	१२
१३	कालकान० " "	२	७	१५	१२
१४	द्विष्ट स० " "	१४			



	वेहटायोनिमें	८	४	६	३
	मिश्रयोनिमें	२	१४	१२	६
	क्रियावादी	२	१	६	६
	अक्रियावादी	१४	१	६	६
	अज्ञानवादी	१४	२	६	६
	विनयवादी	२	२	६	६
१	आर्तध्यान	१४	६	१०	६
२	सौद्रध्यान	१४	५	६	६
३	धर्मध्यान	१	५	७	६
४	शुद्धध्यान	१	७	६	६
५	वेदनि समुद्र्यात	१४	६	१०	६
६	कषाय "	१४	६	१०	६
७	मरणन्तीक "	१४	५	१०	६
८	वैक्रय "	३	६	१०	६
९	नेत्रम "	२	५	१०	६
१०	शाहारीक "	१	२	७	६
११	केवली "	१	१	३	२

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव स

## थोकरा नम्वर. १३

—००००००००—

( बहुश्रुत कृत )

नं.	भागंगा	जी.	गु.	पौ.	उ.	ले.
१	वागुदेवही आगति	१	५	१०	६	५
२	हार्यादि मम्यरु द्वीष्टो	१	१	१५	७	६
३	अत्रती मनवांगमे	१	१	१२	६	६
४	एकान्तगाभी मम्य . अत्रती	२	२	१३	६	६
५	अशमन हार्यादिमे	१	२	११	७	७
६	नेत्रोलेरी एकेन्द्रिमे	१	१	३	३	१
७	अमर गुणस्थानमे	१	३	१२	१२	६
८	अमर गु० छप्रस्थ	१	२	११	१०	६
९	अमर गु० चत्मान्न	१	१	१२	६	६
१०	पथाधान मयांगि	१	२	११	६	१
११	गुण० अमरान्त	१४	२	१२	११	६
१२	मयांग गु० अमरान्त	१४	२	१२	११	६
१३	छप्रस्थ गु० अ	१०	१	३	१	६

सकपाय गुणस्थान चरमान्त	१४	२	१३	१०	६
नवेद गु० च०	१४	२	१३	१०	६
व्रतीद्यदस्य गु०	१	७	१४	७	६
अप्रमत्त हृद०	१	६	११	७	३
हान्यादि संयती	१	३	१४	७	६
हान्यादि अप्रमत्त	१	२	११	७	३
व्रती सकपाय	१	५	१४	७	६
व्रती नवेद	१	४	१४	७	६
व्रती ददन्ध	१	७	१४	७	६
नम्यः नवेद	६	७	१५	७	६
नम्य सकपाय	६	६	१५	७	६
नम्य नवेद	७	६	१०	७	६

। संवभते संवभते =मेव मञ्जम् ॥

## थोकडा नं. १४



( बहुश्रुत कृत )

( २८ लब्धि )

मार्गणा.

आमोसहि	लब्धि
विप्पोसहि	”
अलोसहि	”
खेलोसहि	”
सुव्वोसहि	
संमिन्नयोता	”
अवधिज्ञान	
अजोमति	
विपुलमति	”
केवलज्ञान	”
परम	”
अरिहत	”

गराघर	..	११	११	११	११
चक्रवर्त	११	११	११	११	११
बलदेव	..	११	११	११	११
वासुदेव	११	११	११	११	११
आहारीक	..	११	११	११	११
बैक्रय	११	११	हवे	हवे	हवे
पुलाक	..	११	नहीं	नहीं	नहीं
तेजोलेख्या	..	११	हवे	हवे	हवे
शीतलेख्या	..	११	११	११	११
कोठबुद्धि	..	११	११	११	११
दीजबुद्धि	..	११	११	११	११
पूर्वघर	११	११	नहीं	नहीं	नहीं
पदानुसारखी	११	११	हवे	हवे	हवे
आर्त्तविल	११	११	११	११	११
सीगंजुपा	..	११	११	११	११
अज्ञानाचमी	..	११	११	११	११

॥ स्वेवंभते स्वेवंभते नमेव सच्चम ॥





वैक्रपसे लिये हूवे सर्व द्रव्य गीनतीमे नहीं अर्थात् फीरसे औदारीक वर्गणादारे द्रव्यग्रहन करे तान्पर्य यह है कि औदारीक वर्गणादारे द्रव्यग्रहन करतों जदें तक सम्पूर्ण लोकके द्रव्य औदारीक वर्गणादारे ग्रहन करे बहातक बीचमे दुसरी वर्गणा न आवे वह एक वर्गण कही जावे । इसीभाफीक वैक्रय वर्गणासे द्रव्यग्रहन करतों बीचमे औदारीकादि वर्गणासे द्रव्य लेवेतों गीनतीमे नहीं परन्तु सर्व लोकका द्रव्य वैक्रपसेही लेवे बीचमे दुसरा भव नकरे तों गीनतीमे आवे इसी भाफीक सातों वर्गणासे क्रमःसर सम्पुरण लोक द्रव्यग्रहन करे उन्हीकों द्रव्यापेक्षा सुष्ठम पुद्गल परावर्तन केहते हैं.

( ३ ) क्षेत्रापेक्षा वादर पुद्गलपरावर्तन—अमंख्याते फोडो न कोड योजनके विस्तारवाला यह लोरु है जिन्ही के अन्दर रहे हूवे आकाश प्रदेश भी अमंख्याते है उन्ही आकाश प्रदेशोंको एकेक समय एकेक प्रदेश निकाला जावे तों अमंख्याते कालचक्र पुर्ण हो जावे इतने आकाश प्रदेश हैं.

एक आकाशप्रदेश पर जीव जन्ममरण कीया है वह गीनतीमे और फीरमे उन्ही आकाशप्रदेशपर भेरे वह इन्ही पुद्गलपरावर्तनेन कि गीनतीमे नहीं आवे उर्मा भाफीक अन्पर्य किये हूवे आकाशप्रदेश पर जन्ममरण करे हो सम्पुरण लोकआकाशप्रदेशोंको स्पष्ट करे । तार जन्ममरण करती है यह

असंख्याते प्रदेशपर करता है वधायि यहाँपर मौल्यवा एकही प्रदेशकी गीनी यह है। इसी नास्तिक प्रत्येक प्रदेशपर जन्म-मरण करते हुवे तन्मृत्यु लोक पुरख करदे उन्हीको क्षेत्रावेदा बादर पुद्गलपरावर्तन केइते हैं तात्पर्य यह हुवे कि एकेक प्रदेशपर भूवकालमें जीव जनन्तीवार जन्ममरण कीया है बादर पुद्गलपरावर्तनमें काल अनन्ता लगता है।

( ४ ) क्षेत्रावेदा जन्म पुद्गलपरावर्तन-पंक्तीबन्ध आकाश प्रदेशको श्रेणि केइते हैं वह श्रेणियों लोकमें असंख्यायी हैं जिन आकाशप्रदेशपर जीव जन्मा है उन्ही आकाशप्रदेशकी पंक्तीबन्ध श्रेणियर जन्ममरण करता जावे इन्हीमें तन्मृत्यु श्रेणि पुरख करदे अगर बीचमें विचनश्रेणि अर्थात् श्रेणि बहार जन्म करे तो गीनगीने नहीं एक आचार्य महाराजकी मान्यता है कि जीवना विचनश्रेणि भव करे वह गीनगीने नहीं हुनके आचार्यकी मान्यता है कि वहाँउक विचने शनश्रेणि विचनश्रेणि भव कीया है वह भवेही गीनगीने नहीं है। तन्वके बलागन्ध इनी नास्तिक श्रेणि पुरख करे पछि उन्हीके पानकि श्रेणियर जन्ममरण करे बीचमें विचनश्रेणि न करे तो गीनगीने अगर करे तो गीनगीने नहीं इनी नास्तिक तन्मृत्यु लोककी श्रेणियोंके जन्म मरण करे उन्हीमें क्षेत्रावेदा जन्म पुद्गलपरावर्तन केइते हैं व हुनके लोकोक जन्म अनन्तमृत्युमें लागे हैं।

( ५ ) कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन—बीस कोडा-कोड सागरोपमका एक कालचक्र होता है उन्हीका समय असंख्याते है एक कालचक्रके पहला समयमें जीव जन्ममरण कीया फीर दुसरा कालचक्रके पहला समयमें जन्ममरण करे यह गीनतीमें नहीं परंतु अन्य अस्पर्श समयके अन्दर जन्म-मरण करे यह गीनतीमें आवे इमी भाफीक जन्ममरण करते करते सम्पुरण कालचक्रके सर्व समयोंपर जन्ममरण करे उन्हीकों कालापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है । उन्हीमें भी काल अनन्त पुरण होते है ।

( ६ ) कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन—पूर्वोक्त काल-चक्रके प्रथम समय जन्ममरण कीया और दुसरें कालचक्रके दुसरें समय जन्ममरण करे तो गीनतीमें शेष समयमें जन्म-मरण करे तो गीनतीमें नहीं इसी भाफीक तीसरा कालचक्रका तीसरा समयमें चौथा कालचक्रके चौथा समयमें एवं क्रमःसर समयमें जन्ममरण करे तो गीनतीमें आवे किन्तु विचमें अन्य समयमें जन्ममरण करे तो सब भवे गीनतीमें नहीं इमी भाफीक सम्पुरण कालचक्रकों पुरण करदे उन्हीकों कालापेक्षा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तन केहते है बादरमें सूक्ष्मको काल अनन्तगुणा लगता है ।

। ७ । भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन — हरति पनु-

भाग तथा सर्व स्थितिका स्थान अंतर्ख्याते है उन्ही अंतर्ख्याते स्थानपर जन्ममरण करे जैसे एक स्थान जन्ममरण कर स्पर्श लिया है अब दुसरी दफे उन्ही स्थानपर अनेकवार जन्ममरण करे वह गीनतीमें नहीं आवे परंतु नहीं स्पर्श कीये हुवे स्थानको स्पर्श कर मरे वह गीनतीमें आवे इसी माफीक अस्पर्श कीये हुवे सर्व स्थानोंको जन्ममरण द्वारे स्पर्श करते करते सर्व अध्यवशाय स्थानको स्पर्श करे उन्हीको भावापेक्षा बादर पुद्गलपरावर्तन केहते है । कालपूर्ववत्

( = ) भावापेक्षा सूक्ष्मपुद्गल परावर्तन-पूर्वोक्त जो अध्यवशायके अंतर्ख्याते स्थान है उन्हीको क्रमःसर स्पर्श करे जैसे प्रथम स्थानको स्पर्श कीया बादमें कालान्तर दुसरेको स्पर्श करे अगर बिचमे अन्यस्थानको जन्ममरण कर स्पर्श करे वह गीनतीमें नहीं परन्तु क्रमःसर करे वह गीनतीमें आवे एवं तीजो चौथो पांचमो छठो यावत् क्रमःसर चरमस्थान स्पर्श करे इन्ही को भी अनन्तकाल लागे है उन्हीको भावारूपेक्षामूक्ष्मपुद्गल पवाचनने केहते है और कितनेक आचार्योंकी यहभी मन्यता है कि जो नागकाकि जघ० १०००० वर्ष कि स्थितिमे लगाके ३२ नागरापमर्का स्थितिका अपन्थाने स्थान है उन्ही भवको अस्पर्श कोस्पर्श कर भव स्थानको जन्ममरणद्वारे पुद्गल कर देवे एवं देवतेमें ३? नागरापम तथा मनुष्य तीर्थचमे ३० अन्तर





भरमदाना रहे वह लेके शीलाक पालामें डालदे तब  
 शीलाक पालामें तीन दाने जमा हूवे । जिस द्विप या  
 ममुद्रमें अनवस्थित पाला ग्याली हूवा या उन्ही द्विप  
 या ममुद्र जीतना विस्मारग्याला पाला बनाके मरमवके  
 दानामे भरके आगेका द्विप ममुद्रमें एकेरुदाना डालते डालते  
 बना जावे शेष भरमका दाना शीलाक पालामें डाले तब शी-  
 लारुपालामें चार दाने जमा हूवे । इमीमाफीक अनवस्थित  
 पाला कि नरीनरी अवस्था होने एकेक दाना शीलाकमें  
 डालते डालते लघ जंत्रनके विस्मारग्याला शीलारुपाल भी  
 ममुद्रगु भरा जावे तब अनवस्थित पालाको जहाँ ग्याली हूवा  
 है वहाही छोड दे और शीलाकपालको हायमे ले के एकरुदाना  
 द्विपमें एकरुदाना ममुद्रमें डालते डालते शेष एकरुदाना रहे वह  
 प्रतिगीलाकमें डाल देना अरुगीलाक ग्याली पडा है पीदा  
 अनवस्थितका पाला जो कि शीलकका भरमदाना त्रिम द्विप  
 या ममुद्रमें पडाथा उन्ही द्विप या ममुद्र जीतना अनवस्थित  
 पाला बनाके मरमवके दानामे भरके द्विप ममुद्रमें डालता जावे  
 शेष एक दाना रहे वह फीरमें शीलाकपालामे डाले एकेक  
 दाना डाल के पढ़ने कि माफीक शीलाकको मरुटे फीर  
 शीलाक का उट्राके एकेक दाना द्विप वा ममुद्रमें डालते  
 डालते शेष एक दाना रहे वह प्रतिगीलाकमें डाले तब प्रति-  
 गीलाकमें दो दाना जमा हूवे और अनवस्थित पालामे एकक

दाना डालके शीलाक पालाको भरे और शीलाकके एकेक दाना प्रतिशीलाकमे डालते जावे इसीमाफीक करते करते प्रतिशीलाक पाला लक्ष जोवनके परिमाण चाला भी सीखा सहित भरा जावे तब अनवस्थित और शीलाक दोनोको छोडके प्रतिशीलाकको हाथमे लेके एक दाना द्विपमे एक दाना समुद्रमे डालते डालते शेष एक दाना रहे वह महा शीलाकमे टलदेना जीस द्विपमे प्रतिशीलाक पाला खाली हूवा है इतना विस्तारवाला और भी अनवस्थितपाला बनाके सरसवसे भरके आगेके द्विप समुद्रमे एकेक दाना डालता जावे पूर्ववत् अनवस्थितपालासे शीलाकपालाको एकेक दानासे भरदे और शीलाक भरा जावे तब शीलाकसे प्रतिशीलाक भरदे और प्रति शीलाक पालासे पूर्ववत् एकेक दाना डालते डालते महाशीलाकको भरदे आगे पांचमो कोइ भी पाला नही है इसी वास्ते महाशीलाक पाला भरा हूवा ही रहेना देवे और पीच्छले जो अनवस्थित पालासे शीलाक भरे और शीलाक पालासे प्रतिशीलाक भरदे प्रतिशीलाक खाली करनेको अब महाशीलाकपालामे दाना समावेश नही हो शक्ता है वास्ते प्रतिशीलाक भी भारा हूवा रहे और अनवस्थित पालासे शीलाक पाला भर देवे आगे प्रति शीलाकमे दाना समावेश हो नहीं शके इसी वास्ते शीलाक पाला भी भरा हूवा रहे और अनवस्थित पाला भरा हूवा है वह शीलाक पालामे दाना समावेश







पृष्ठा परे गो पर रागी मध्यम अन्वय अन्वय है अथवा मू. दाना रागीके बीलानेके पृष्ठा परे गो उन्ही अन्वय अन्वय होगा है और दूसरा दाना बीलानेके पृष्ठा परे गो अथवापृष्ठा अन्वय होगा है.

अथवा गुना अन्वय कि रागीको रागी अथवाग पूर्वशु थां उन्ही रागीमें दो दाना निकालके पृष्ठा करने मध्यमगुना अन्वय होगा है उन्ही रागीमें एक दाना डालके पृष्ठा करने उन्ही गुना अन्वय होगा है और दूसरा दाना डालके पृष्ठा करने अथवा अन्वय अन्वय अन्वय होगा है यह विधि अनुमागद्वार मध्यम करी है ।

महान्तर एक आध्यात्मिकाराज कहते हैं कि जो उपर थांधो जपन्वगुना अन्वयवाते है उन्हीका र्ग करना जीतनेको जीतने गुणा करना जेने दानाको दानागुना करनेमें १०० होता है र्गी माफीक अन्वयवातेको अन्वयवातगुना करनेमें जो रागी हो उन्हीको सातमा जपन्व अन्वयवाते अन्वयवात कहते है अथवा मन्वय दो दाना निकालनेम पांचमा मध्यम गुना अन्वयवात होता है एक दाना बीलानेमें ३०० गुना अन्वयवात होता है दूसरा दाना बीलानेमें जपन्व अन्वयवाते अन्वयवात होता है

जपन्व अन्वयवाते अन्वयवात है ३००



और दूसरा दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य प्रत्येक अनन्ते होता है उन्ही रासीको और भी पूर्ववत् त्रीवर्ग करके दो दाना निकालनेसे मध्यम प्रत्येक अनन्ते होता है एक दाना मीला-देनासे उत्कृष्ट प्रत्येक अनन्ते होते हैं और दूसरा दाना मीला-देनेसे जघन्ययुक्ता अनन्ते होते हैं ( इतने अभव्य जीव है )

जघन्य युक्ता अनन्ते को त्रीवर्ग-पूर्ववत् तीनवार वर्ग करके जो रासी आवे उन्ही रासीसे दो दाना निकालके शेष रासीकी पृच्छा करे तो वह रासी पांचमा मध्यम युक्ता अनन्ता होता है एक दाना डालके पृच्छा करे तो जघन्य अनन्ते अनन्ता होता है ।

जघन्य अनन्ते अनन्त को और भी तीनवार वर्ग करे तो भी उत्कृष्ट अनन्ते अनन्त न हवे उन्ही रासीके अन्दर ६ चोल और भी मीलावे यथा--

- ( १ ) सिद्धोंके सर्व जीव ( अनन्ते हैं )
- ( २ ) निगोदके जीव ( मून्मवादर निगोद )
- ( ३ ) वनास्पतिके जीव ( प्रत्येक और साधारण )
- ( ४ ) भूत भाविष्य वर्तमान कालज्ञा समय
- ( ५ ) परमाणु वादि सर्व पृष्टल स्कन्ध
- ( ६ ) लोकालोक के अज्ञान्य प्रदेश



